Q. Distinguish between planning by direction and planning by enducement discuss their relative merits and demerits. How far they are complementary to each other.

आर्थिक नियोजन वर्तमान शताब्दी की महत्वपूर्ण देन है, जो सम्पूर्ण विश्व अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती लगी है और यों कहा जाय कि आधुनिक युग का यह एक catch-word बन गयी है। जिसने विश्व के हर कोने के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है और एक order of the day बन गया है या जैसा कि Robinson ने कहा कि "Planning is a grand panacea of our age". Lewis ने इसकी लोकप्रियता का स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि उत्कट अर्थशास्त्रवादी भी अब नियोजन के पक्ष में हो गये हैं और स्थिति यह है कि "We are all planners now". वास्तव में अब यह प्रश्न रह ही नहीं गया है कि नियोजन हो या न हो। बल्कि अगर प्रश्न है, तो केवल इसमें कि इसका - Model, Technique और Method क्या हो।

यदि आर्थिक नियोजन के अर्थ पर ध्यान आकृष्ट किया जाता है तो दिखता है कि यह वह तरीका है जो कि महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों को लेने से सम्बद्ध होती है, जो एक निश्चित समय में साधनों का निर्धारित विवरण इस तरह आवंटन से सम्बद्ध हो कि इसमें अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। या जैसा कि Dickinsion ने कहा कि क्या और कितना

(2) उत्पादित हो, किसके बीच उसका आवंटन हो, उसके अर्थव्यवस्था के सर्वेक्षण के आधार पर एवं निश्चित अधिकारी के द्वारा लिया गया विवेकपूर्ण निर्णय ही योजनाकरण है। अब योजना के इस प्रतिरूप के क्रियान्वयन या उसके लिए साधनों के आवंटनों की दो पद्धतियाँ हो सकती हैं:—

(1) Planning by direction के अन्तर्गत योजनाधिकारी या राज्य के द्वारा स्वयं के निर्देश उसके क्रियान्वयन की। और

(2) Planning by Inducement के अन्तर्गत बाजार तंत्र की क्रियाशीलता को प्रभावित करने के माध्यम से योजना के क्रियान्वयन की।

प्रथम योजना पद्धति के अन्तर्गत कि केन्द्रीय नियोजन अधिकारी स्वयं योजना निर्माण करती है और उसके पूर्व निर्धारित लक्ष्यों और प्राथमिकताओं के अनुकूल, उसके क्रियान्वयन के लिए आदेश या निर्देश निर्गत करती है। जबकि दूसरी योजना पद्धति के अन्तर्गत योजना अधिकारी सामाजिक उद्देश्यों के अनुकूल बाजार तंत्र की क्रियाशीलता को नियंत्रित करती है। स्पष्ट है कि प्रेरणात्मक नियोजन में योजना आवश्यक विधि से कार्य करते हैं, उसके निर्देशन ~~अप्रत्यक्ष~~ अप्रत्यक्ष होते हैं— जबकि आदेशात्मक नियोजन में सरकार अर्थव्यवस्था की आर्थिक क्रियाओं को प्रत्यक्षतः नियंत्रित करती है, साथ ही निर्देशित भी करती है। यहाँ राजकीय नियंत्रण दृश्य हो जाता है या यूँ कहें कि प्रेरणात्मक नियोजन प्रजातांत्रिक पद्धति के अनुकूल है वहीं आदेशात्मक नियोजन (content, प्रभाव अर्थ की दृष्टि) से अधिनायकवादी योजना होती है। आदेशात्मक नियोजन जहाँ प्रत्यक्ष नियोजन होता है,

निर्देशित

(3) वहीं प्रेरणात्मक नियोजन अप्रत्यक्ष है। आदेशात्मक नियोजन में बाजार यंत्र को समाप्त कर दिया जाता है, जबकि प्रेरणात्मक नियोजन में उसे केवल निर्देशित किया जाता है। USSR की योजना पद्धति आदेशात्मक है, तो भारत की योजना पद्धति प्रेरणात्मक है। अर्थात आदेशात्मक नियोजन समाजवादी नियोजन का प्रतिरूप है, तो प्रेरणात्मक नियोजन उन्मुक्त अर्थव्यवस्थाओं में भी क्रियान्वित की जा सकती है। आदेशात्मक नियोजन में सारी आर्थिक सत्ता पर राज्य का आधिपत्य होता है, जबकि प्रेरणात्मक नियोजन में निजी सम्पत्ति की व्यवस्था रहती है। हाँ इस पर नियंत्रण होता है, आदेशात्मक नियोजन, राजकीय सत्ता के उपयोग से क्रियान्वित और सफल होती है, जबकि प्रेरणात्मक नियोजन के क्रियान्वयन और सफलता का आधार होता है - जन सहभागिता।

जैसे अगर मान लें कि योजना अधिकारी यह उद्देश्य निर्धारित करें कि राज्य के सभी नागरिकों के स्वास्थ्य सुधार के लिए उन्हें प्रतिदिन एक अण्डे उपलब्ध कराया जाए। अब सभी व्यक्तियों को एक अण्डे प्रतिदिन उपलब्ध कराने का उद्देश्य है योजनाकारों का..., जिसे योजनाधिकारी दो तरह से प्राप्त कर सकते हैं। जैसे योजना अधिकारी सभी poultry farms को आदेश दें कि वह अण्डे के उत्पादन को बढ़ाएं या स्वयं poultry farms स्थापित करें या सभी परिवार प्रमुख को यह आदेश दें कि वह अपने परिवार के सभी सदस्यों को प्रतिदिन एक अण्डा दें। यह आदेश होते ही इसका अनुपालन होना चाहिए।

(4) योजना का यह प्रतिरूप आदेशात्मक नियोजन होगा। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि बाजार में अण्डे की मांग और पूर्ति को प्रभावित करें। जैसे किसी परिवार के सदस्यों को बढ़ा दें और किसी परिवार के सदस्यों को अनिवार्य रूप से कम कर दो बढ़े हुए पारिवारिक सदस्यों को अनिवार्य अण्डे के रूप पर व्यय करें। और एक वैकल्पिक तरीका यह हो सकता है कि अण्डे के उत्पादकों को अनुदान देकर इसके मूल्य को घटाने के लिए उन्हें अनुप्रेरित करें और मूल्य घटने से अण्डे की माँग स्वयं बढ़ जायेगी और अनुदान देने से उनकी पूर्ति स्वयं बढ़ जायेगी या अण्डे की पूर्ति के बढ़ने से इसकी कीमत स्वयं कम हो जायेगी, योजना का उद्देश्य पूरा हो जायेगा। इस रूप में क्रियान्वित योजना - प्रेरणात्मक नियोजन है, जो बजट के माध्यम से या अनुदान या करारोपण के उपयोग के माध्यम से क्रियाशील होती है। इसप्रकार उपभोक्ताओं को और उत्पादकों को क्रमशः अधिक अण्डे का उपभोग और उत्पादन करने का आदेश देना आदेशात्मक नियोजन है, जबकि उन्हें अधिक अण्डे उत्पादन और उपभोग के लिए अभिप्रेरित करना या प्रेरणा प्रदान करना प्रेरणात्मक नियोजन है। इसप्रकार आदेशात्मक नियोजन में योजना का formulation, execution, Implementation और Monitoring केन्द्रीय योजना अधिकारी के द्वारा ही होता है और Hayek एवं उनके समर्थकों का यह कथन कि planning is a road to serfdom.

वास्तव में आदेशात्मक नियोजन वाली व्यवस्था में ही उपयुक्त क्रियाशील माना जा सकता है। एवं प्रेरणात्मक नियोजन वाली व्यवस्था में कभी नहीं।

प्रजातान्त्रिक नियोजन के हिमा-

(5) यती प्रेरणात्मक नियोजन के पक्ष में अपना मत देते हुए आदेशात्मक नियोजन की अनेक बुराइयों का विश्लेषण करते हैं। जैसे यह कहा जाता है कि आदेशात्मक नियोजन में स्वतंत्रता की महत्ता का अपहरण होता है, क्योंकि ऐसी योजना-अन्तर्गत उपभोक्ता की पसन्दगी के क्षेत्र को संकीर्ण बना देती है। यह पद्धति व्यक्ति की स्वतन्त्रता को समाप्त कर देती है। साथ ही पेशे के चुनाव की स्वतन्त्रता को भी समाप्त कर देती है, क्योंकि योजना अधिकारी स्वयं श्रम और वस्तु बाजार को निर्धारित करते हैं और इस क्रम में मूल्य निर्धारण या Rationing जैसे उपायों का प्रयोग करते हैं, जिसके फलस्वरूप नौकरशाही और लालफीताशाही के तत्व पनपते हैं।

आदेशात्मक नियोजन में योजना अधिकारी सर्वगुण सम्पन्न और सर्वशक्तिमान मान लिये जाते हैं और यह उम्मीद की जाती है कि अपनी क्रियाओं के सारे प्रभावों का पूर्वानुमान उनके द्वारा कर लिया जायेगा। लेकिन वर्तमान जटिल व्यवस्था में एक वस्तु के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उपादानों के उत्पादन को निर्धारित करना और उनके उत्पादन को बढ़ाना आवश्यक होता है। ऐसी स्थिति में असंख्य वस्तुओं के उत्पादन पर एक व्यक्ति के द्वारा एक ही समय पूर्ण रूप से ध्यान रखा जाना सम्भव नहीं दिखता, जिसका परिणाम होगा वस्तुओं का अपूरित रह जाना। जैसा कि Lewis ने कहा कि "The result is always a shortage of somethings and surplus of other." हालांकि USSR की अर्थव्यवस्था में ऐसी समस्या का समाधान कर लिया गया है।

पैरा

आदेशात्मक नियोजन की एक बुराई

यह भी मानी जाती है कि यह बेलोचशील होती है, क्योंकि योजना के किसी भाग को बिना उसके सम्पूर्ण भाग के बदले परिवर्तित करना बहुत ही कठिन होता है, जबकि परिस्थितियों के परिवर्तित परिवेश में यदाकदा आवश्यकता होती है, इसके लक्ष्यों या इसके किसी विशेष भाग को परिवर्तित करने की, जिसका नियोजन योजना को इस पद्धति में सम्भव नहीं।

ऐसी नियोजन पद्धति में Lewis की राय में Tendency to procrustean उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि योजना में ~~प्रमापीकरण~~ प्रमापीकरण को समूह के मानक के रूप में स्वीकार किया जाता है, लेकिन प्रमापीकरण से उत्पादन में variation variations नहीं आ सकते, साथ ही पद्धति में शिथिलता या इच्छाशक्ति का अभाव उत्पन्न हो जाता है। इतना ही नहीं नव प्रवर्तन की चाह में उद्यमशीलता का उत्साह भी उत्पादन में गायब हो जाता है।

यह भी कहा जाता है कि ऐसी योजना पद्धति न केवल जटिल होती है, बल्कि खर्चीली भी होती है, क्योंकि ऐसी योजना के लिए साधनों की विस्तृत ज्ञान की व्याख्या होगी, जिसके लिए गणना, निर्देशन आदि की विस्तृत व्यवस्था के लिए विशेषज्ञों, सांख्यिकी विदों, अर्थशास्त्रियों और अन्य कुशल कर्मियों की भारी संख्या में आवश्यकता होती है व जितना ही अच्छी योजना बनाना चाहते हैं, उतना ही अधिक योजनाकारों की आवश्यकता होती है। USSR की योजना में केवल अर्थशास्त्री 19 लाख से अधिक की संख्या में कार्यरत हैं।

Scanned with CamScanner

पेज-8 और का परिणाम होता है। किसी वस्तु के अभाव
का, तो किसी वस्तु के अति उत्पादन का
जहाँ आवश्यकता होती है, मूल्य नियंत्रण और
Rationing के माध्यम से विसंगतियों को दूर
करने की, जो आदेशात्मक नियोजन के अंग
होते हैं, जिसके अभाव में योजना विफल
हो जा सकती है या जिसके रहते योजना
का रूप आदेशात्मक हो जाता है।

प्रेरणात्मक नियोजन में योजना की
क्रियाशीलता के साथ मौद्रिक एवं वित्तीय
नीतियों का उपयोग ऐसी निवेश की दर को
बढ़ाने या तदनुकूल नियोजित विकास स्तर को
प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है, ले
-किन अल्पविकसित देशों में जहाँ न केवल
आय और बचत के स्तर कम होते हैं बल्कि
बल्कि लोगों की प्रवृत्ति होती है, अपनी बचत का अ
अनुत्पादक दिशा में प्रयोग करने की या प्रदर्शन
प्रभाव से ग्रस्त होने की। ऐसी स्थिति में केवल
केवल मौद्रिक एवं वित्तीय नीतियाँ योजना के उद्देश्यों
को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी और
मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के अतिरिक्त
physical policy के क्रियान्वयन की आवश्यकता
होगी, जिसके अभाव में योजना विफल हो
जाएगी और जिसकी उपस्थिति में योजना
का प्रारूप आदेशात्मक हो जायेगा। अतः जन
सह-भागिता पर आधारित प्रेरणात्मक नियोजन
की सफलता सर्वथा शर्तयुक्त होती है।

सच में दिखता है कि आदेशात्मक व
प्रेरणात्मक दोनों ही नियोजन पद्धतियों में
त्रुटियाँ हैं, फिर भी चुनाव की दृष्टि से समाज-
वादी देश आदेशात्मक और पूंजीवादी देश और

Scanned with CamScanner

पैरा-7 जो इस तथ्य का सूचक है कि इसकी योजना में निर्माण लागत अधिक होती है।

लेकिन दूसरी ओर यह भी सही है कि लक्ष्यों की प्राप्ति के सन्दर्भ में आदेशात्मक नियोजन प्रेरणात्मक नियोजन से अधिक सफल होते हैं, क्योंकि उनके क्रियान्वयन का दायित्व स्वयं योजना अधिकारी पर होता है। अतः क्रियान्वयन में Lag या Handicap या Bottle neck या कोई कमी नहीं रह जाती है। विशेषकर Physical targets व Quantities के वर्तमान होने के कारण।

दूसरी ओर प्रेरणात्मक नियोजन में चूंकि बाजार यंत्र की उपस्थिति में योजना कार्य होता है। अतः उत्पादकों, उपभोक्ताओं आदि की स्वतंत्रता बनी रहती है और औद्योगिक उद्योगपतियों को पद्धतियों के चुनाव में किसी Straight Jacket में बंधे रहने की आवश्यकता नहीं होती है। साथ ही, ऐसी नियोजन पद्धति में उत्पादन व्यवस्था की गतिशीलता का मूल्य और मुद्रा के प्रवाह के अतिरिक्त वस्तुओं की मांग व पूर्ति के प्रवाह और समायोजन के माध्यम से नियंत्रित कर लिया जाता है। साथ ही, ऐसी योजना लोचशील होने के कारण परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तनीय होती है और उनके माध्यमों से सन्तुलन बने रहने की सम्भावना होती है।

लेकिन इसके अवगुण इसकी क्रियाशीलता से सम्बद्ध अनेक बुराइयाँ हैं, क्योंकि ऐसी ~~ऐसी~~ योजना की क्रियाशीलता बाजार यंत्र पर आधारित होती है, जबकि मांग व पूर्ति के बीच उचित समायोजन का होना कठिन होता है

पेज-9

मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले देश प्रेरणात्मक नियोजन पद्धति के पक्ष में आ सकते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि इन दोनों को Water-tight compartments में नहीं रखा जा सकता और एक अल्प विकसित देश के संदर्भ में तो नियोजन की ये दोनों पद्धतियाँ एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों की आवश्यकता है। क्योंकि सरकार के पास वित्तीय एवं प्रशासनिक दोनों ही साधनों का अभाव होता है अतः अर्थव्यवस्था को विकसित करने का भार वह केवल अपने ऊपर नहीं ले सकती। फलतः उसे निजी क्षेत्र की आवश्यकता होगी, जिस पर वह नियंत्रण रख सकेगा. योजनाधिकारी कर या अनुदान से एक ओर प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं, तो बचत, निवेश, उपभोग, उत्पादन आदि को सही दिशा भी दे सकते हैं, वहीं अनिवार्य प्रतिबन्ध, मूल्य निर्धारण, कराधान आदि के माध्यम से साधन भी जुटा सकते हैं, तो फिर भारी उद्योगों, सामाजिक एवं आर्थिक उपरि व्ययों आदि की स्थापना का दायित्व भी स्वीकार कर सकते हैं। अब इस रूप में एक मिश्रण की स्थिति आदेशात्मक व प्रेरणात्मक नियोजन की पद्धतियों की उत्पन्न होगी, जिनके बीच अगर अनुकूलतम समन्वय हुआ तो वही नियोजन पद्धति सर्वाधिक उपयुक्त हो जायेगी।

Scanned with CamScanner